

२०२२-२०२३

केरल ज्योति

जुलाई 2022

ISSN 2320-9976
UGC Care - List Sr. No.58

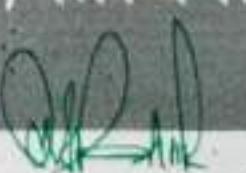


केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम



S.D.
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam




PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

कैरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख्य पत्रिका
(केदीप हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पृष्ठ समीक्षा संग्रहीत

प्रा. (डॉ.) एन. रवींद्रनाथ
प्रो. (डॉ.) सुधा बालकृष्णन
पा. (डॉ.) आर. जयचन्द्रन

प्राप्तशः मंडल

डॉ. तंकमणि अम्मा एस
डॉ. लता पी
डॉ. रामचन्द्रन नायर जे

प्रबन्ध संपादक

गोपकुमार एस (अध्यक्ष)
प्रख्या संपादक/संपादकीय दायित्व
प्रो. डॉ. तंकमणि नायर

संपादक

डॉ. रंजीत रवीश्वरम

संपादकीय मंडल

सदानन्दन जी
श्रीकुमारन नायर एम
प्रो. रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एलसी सामुवल
आनन्द कुमार आर एन
प्रभन जे एस
अधिवक्ता मधु वी (मंत्री)

सूचना : लोकवाच द्वारा प्रकट किये गये
मत उनके प्रपने हैं। उनसे संपादक का
सहमत होना जावशक्त नहीं।

पृष्ठ : 59 दत्त : 4

मंका : जुलाई 2022

अनुब्रहणिका

संपादकीय

परम ज्योति में समा गए स्व. मुरलीधरन को शत शत प्रणाम
अधिवक्ता मधु. वी.

5

नादिरा जहीर बबर का भाट्य लेखन और नारी जागरण
डॉ. अंबिली. वी. एम.

6

समकालीन हिंदी कविता में प्रकृति का रुदन
विजिना.टी

8

किन्नर समाज की समस्याएँ : एक अवलोकन
डॉ. राजेष कुमार. आर

11

नारी संवेदना के धरातल पर 'कस्तूरी कुण्डल बसे'
आखिल. ए.

19

समकालीन हिंदी एवं नेपाली कविता : संवेदना के विविध त्वर
डॉ. उमा देवी

21

चितारत्न - मूल : तुंचला रामानुजन एथूल्तच्छन
अनुवाद: प्रो. डॉ. तंकमणि नायर व अधिवक्ता मधु. वी.

27

दूनी गाँठ की गठरी - मूल : के.एल. पॉल
अनुवाद : प्रो. डॉ. तंकमणि नायर व अधिवक्ता मधु. वी.

34

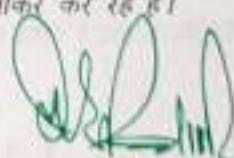
प्रश्नोत्तरी - डॉ. एस. श्रीदेवी

42

मुख्यित्र : एरणाकुलम भवन्सा विद्या मंदिर में प्रो. एम. के. सानु

सुगम हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन
महादीप जलाकर कर रहे हैं।

3



PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam



कैरलज्योति
जुलाई 2022

5/IV

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

नादिरा ज़हीर बब्बर का नाट्य लेखन और नारी जागरण

डॉ. अंबिली. वी. एस.



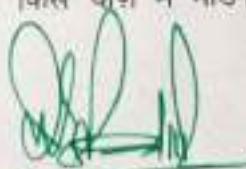
समकालीन महिला नाटककारों में नादिरा ज़हीर बब्बर की खास पहचान है। इन्होंने नारी जीवन के विभिन्न पश्चों की नाट्य प्रस्तुति करके समाज को जागृत करने व स्वीकृतों अस्मिता बोध से संप्रभ बदलने का सराहनीय कार्य किया है। इस सन्दर्भ में डॉ. भगवान जाधव का कथन उल्लेखनीय है। उन्होंने नाटकों में देश की नारी जीवन की समस्याएँ समाज के सामने रखकर देशकाल के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है। (डॉ. भगवान जाधव, हिन्दी महिला नाटककार, पृ. 133) हिन्दी नाट्य अभिनय, लेखन, निर्देशन एवं मंचन के क्षेत्र में नादिरा जी का महत्वपूर्ण योगदान है। उनका जन्म 20 जनवरी 1948 को लखनऊ के सुसंस्कृत-संधान एवं परिवार में हुआ था। ये प्रगतिशील लेखक संघ के संस्थापक सञ्जाद ज़हीर की बेटी हैं। इनके पति मशहूर अभिनेता -नेता राज बब्बर हैं। इन्होंने अपनी 'नाट्य संस्था' 'एकजुट' के माध्यम से मंथ के क्षेत्र में कई नए प्रतिमान कायम किए हैं। उनके नाटकों में 'शराफत छोड़ दी मैंने', 'दयाशंकर की ढायरी', 'दिल ही तो है', 'सकुबाइ', 'सुपन और सना', 'जी जैसी आपकी मर्जी', 'ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट' आदि प्रमुख हैं। उन्होंने टी.वी. धारावाहिकों और फिल्मों में भी प्रचुर काम किया है। इन्हें केन्द्रीय और उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के पुरस्कार, यशभारती पुरस्कार, महिला शिरोमणि पुरस्कार आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। अतः आप एक बहुमुखी प्रतिभा संप्रभ साहित्यकार एवं रंगकर्मी हैं।

5/1
Head of the Deptt. of Hindi
N.S.S. College, Pandafam



और पुरानी मानसिकताओं के कारण उमामउम पुरुष की आज्ञा का अनुसरण करती, तकलीफ डोलकर कठमुतली सा जीवन बिताने के लिए विवश चार स्त्रियाँ (दीपा, वर्षा, मुलाना और बबली) के ज़रए स्वीकृता और उसके प्रतिरोध की चर्चा की गयी है। चारी स्त्रियाँ ने समाज से बहुत सारे सवाल पूछे हैं, लेकिन उनका उत्तर आज तक उन्हें नहीं मिला है। प्रस्तुत नाटक में गदार साल की दीपा अपने बाप के लिए बोझ है। मिता घेटे से लाड प्यार करता है और दीपा पर अत्याचार। दीपा की हमेशा किसी न किसी कारणवश प्रताड़ित होकर मार खाना पड़ता है और अंधेरी कोठरी में बंद होना पड़ता है। लड़की होने से दीपा और उसकी बहन को कभी कोई नहीं पूछता। ऐसे में दीपा घर पर अपने अधिकारों को लेकर, अस्तित्व को लेकर यों सवाल उठाती है, ऐसा क्यूँ होता है? क्यों हम बहनों को मार पड़ती है? क्यों भैया इंग्लिश मीडियम में और हम बहनें हिन्दी मीडियम में? भैया को दो-दो ट्यूशन फिर भी घिस्ट-घिस्ट के पास होता है। हम बिना ट्यूशन के स्कॉलरशिप लाते हैं। फिर भी क्यों नहीं प्यार करते हमें सब लोग..? क्या बुराई है हममें, हमें भी तो प्यार चाहिए न? (नादिरा ज़हीर बब्बर, जो जैसी आपकी मर्जी, पृ. 18-19)

दीपा की तरह वर्षा भी स्त्रियों के अधिकार छिन जाने से दुखी है। उसे ऐसा लगता है कि लड़कियों को ही क्यों अपनी इच्छा, आकांक्षा, सपने सब कुछ न्योच्चावर करनी पड़ती है। पुरुषी अहं का वह विरोध करती है। कुछ करने, बोलने या पहनने तक का अधिकार लड़कियों को नहीं दिया जाता है। वर्षा समाज में हो रहे खोखले स्वीकृति पर व्यंग बाण छोड़ती है। वह पूछती है, किस दीज में मॉडन होते हैं ये लोग?

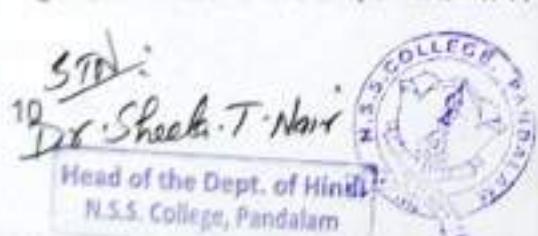


— PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandafam

दिल्ली
जूलाई 2022

और कभी घौकीदार की भूमिकाएं भी निभाती हैं। वह अपनी जिन्दगी के अनुभवों का विस्तृत ब्लौरा स्वयं बहुत सूख्म परिहास के धारों में पिरोकर प्रस्तुत करती है। वह हमें साक्षेदनशील उच्चवर्गीय समाज के पाखंड है। एवं ढोंग के बारे में सोचने के लिए बाध्य करती है। सकुबाई अपने अनुभव से उच्चवर्गीय लोगों की पोल खोलती है। पाटी में उच्चवर्गीय स्त्री का चोरी करना, पति और पत्नी दोनों के गैर सम्बन्ध रखना, घर में पति हारा पत्नी की पिटाई होकर चैवाहिक सम्बन्ध बिगड़ना आदि इसके उदाहरण हैं। इन सब समस्याओं के लिए सकुबाई उचित समाधान भी दैदृष्टि निकालती है।

छोटी सी उम्र में अपने ही मामा द्वारा यौन-शोषण का शिकार होना, पढ़ने-लिखने की उम्र में घर-घर की नौकरानी बनना, छोटी बहन वासंती की आत्महत्या, पिता की मृत्यु, एडस से पीड़ित पति की मृत्यु जैसी विपत्र परिस्थितियों में भी वह बिना हारे आत्मविश्वास एवं धैर्य के साथ आगे बढ़ती है। मामा द्वारा शोषित होने पर भी ने सकुबाई को बहुत समझाया कि मामाबाली बात को हर हाल में गोपनीय रखना है। इस असहनीय ददं और अपमान के बारे में सकुबाई के विचार इस प्रकार हैं कि, ऐसे कितने सारे अपमान हम औरतें इसलिए सह लेती हैं कि घरों में कोई कलेश न हो और यह बह कलेश हमें जीते जी जलाता रहे...। (नादिरा जहीर बब्बर, सकुबाई, पृ. 32) सकुबाई निम्नवर्गीय कामकाजी नारी का प्रतिनिधित्व करती है जिसे दिन-रात कठिन मेहनत करने पर भी एक दिन की छुट्टी तक नहीं मिलती है। सकुबाई स्त्री पर हो रहे अन्याय, अपमान, शोषण आदि का विरोध करती है। इस प्रकार सकुबाई दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास, साहस, मनोबल, मेहनत आदि सकारात्मक गुणों का प्रतीक बनकर प्रस्तुत होती है। छलती उम्र में वह शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार होती है। अतः सकुबाई नारी सशक्तिकरण एवं नारी-जागरण का



उत्तम दृष्टान्त बनकर सामने आती है।

'सकुबाई' नाटक में नादिरा जी ने पुरुष वर्गेश समाज में अपने अधिकारों के लिए लड़नेवाली निम्नवर्गीय कामकाजी नारी के प्रतिरोध को उजागर किया है। माँ ने सकू के भाई को पढ़ाया लेकिन सकू को पढ़ने नहीं दिया तो सकू ने अपनी बेटी को पढ़ाया-लिखाया ताकि शिक्षा के बल पर वह आत्मविश्वास के साथ जिन्दगी का सामना कर सके। उसने जाना था कि शिक्षा ही स्त्री मुक्ति का रस्ता खोलती है। स्त्री पर हो रहे अन्याय, अत्याचार, अपमान, सब कुछ सकुबाई भी झेलती है। मगर वह तमाम मुसीबतों का प्रतिरोध करती है। अपनी इच्छाशक्ति और धैर्य से वह शिक्षित स्वावलंबी स्त्री को भी जागृत करने का सराहनीय कार्य करती है। यह स्त्री के आत्मविश्वास व हिम्मत का विजय है। इस प्रकार जीवन में अनेक मुश्किलों के होने के बावजूद भी हिम्मत से लड़कर अपने अधिकारों को पाने का सन्देश 'सकुबाई' नाटक स्त्रियों को देता है।

संक्षेप में, नादिरा जी के नाट्य लेखन में सदियों से दबी-कुचली और अस्मिता खोजती स्त्री को अस्मिता बोध से युक्त स्त्री बनाने का प्रयत्न होता दिखाई देता है। इसमें स्त्री के प्रतिरोध एवं प्रतिशोध का स्वर मुख्यरित होता है। नादिराजी स्त्रियों की समस्याओं को ही नहीं बल्कि उसके समाधान भी प्रस्तुत करने में सक्षम रहती हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों से प्रतिरोध करके स्त्री इस दुनिया में खुद की पहचान बनाये रखना चाहती है। असल में स्त्री का संघर्ष पुरुष से रखना चाहती है। असल में स्त्री का संघर्ष पुरुष से रखना चाहती है।

सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग
एन.एस.एस.कॉलेज, पंदलगढ़



Principal
N.S.S. College Pandalam

हिन्दूप्रीड़ी
जुलाई 2022

Scanned by CamScanner